''इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन : संकट एवं संघर्ष''

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़ आगरा
की हिन्दी विषय की पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
'रूपरेखा'
2017

निर्देशिका

प्रो0 शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग

शोधार्थिनी

अंजली कुमारी
एम.ए., एम. फिल् हिन्दी

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

(हिन्दी विभाग – कला संकाय)
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा – 282005

''इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन : संकट एवं संघर्ष''

शोध परिचयः

लेखक एक संवेदनशील प्राणी होता है और वह समाज में घटित होने वाली घटनाओं से प्रभावित होकर साहित्य का सृजन करता है और अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों से रूबरू कराता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कहना है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है अर्थात् जिस प्रकार दर्पण व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से अवगत कराता है उसी प्रकार साहित्य समाज का यथार्य बोध कराता है और यह यथार्थ बोध साहित्यकार अपने अनुभवों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

उपन्यास वर्तमान युग की एक सशक्त विधा है। हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में उपन्यास सामाजिक यथार्थ, नए मानव मूल्य सभ्यता और संस्कृति आदि को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने में कारगर सिद्ध हो रहा है। प्रारम्भ में मनोरंजन प्रधान, घटना प्रधान और ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए। इसके पश्चात् व्यक्तिपरक, सामाजिक उपन्यासों की रचना हुयी। प्रेमचन्द्र युग में आदिवासी साहित्य का सृजन न के बराबर देखने को मिलता है। सन् 1960 के उपरान्त हिन्दी उपन्यास कथा जगत में आदिवासी विषय को लेकर लेखन कार्य प्रारम्भ होने लगा।

विश्व के लगभग समस्त भागों में आदिवासी समुदाय का अस्तित्व है। सम्पूर्ण भारत की जनसंख्या का लगभग सात प्रतिशत भाग जनजातीय समाज का है आदिवासी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है–'आदि+वासी'। आदि का अर्थ है 'मूल' और वासी का अर्थ है 'रहने वाले' अर्थात् ऐसे व्यक्ति जो प्रकृति से जुडकर मूल रूप में रहते हैं और उन्हीं प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके अपना जीवन–यापन करते हैं उन्हें आदिवासी के नाम से जाना जाता है। ऐसे लोगों पर लिखा गया साहित्य जिसमें उनके सुख–दुख, हर्ष–विषाद, आकांक्षाएँ एवं विविध समस्याएँ समाहित हैं, वे आदिवासी साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। आदिवासी प्रकृति से जुडे एवं भौतिक समाज से दूर रहते हैं जिसके कारण आदिवासियों के पास शिक्षा का

अभाव होता है इसलिए उन्होंने सुख–दुख का वर्णन स्वयं साहित्य में कम ही किया है। अब इस समाज में कुछ लोग शिक्षित हो गए हैं और वे अब कलम के धनी भी हैं। उन्होंने अपनी समस्या के ऊपर स्वयं लिखना आरम्भ कर दिया है इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उनके द्वारा रचा गया साहित्य ही आदिवासी साहित्य की कोटि में आयेगा, बल्कि जो रचनाकार स्वयं आदिवासी नहीं है लेकिन वह आदिवासी समाज से परिचित हैं उन्होंने भी आदिवासी जनजीवन, रहन–सहन संस्कृति व उनकी समस्याओं को कलमबद्ध किया है। यह सभी साहित्य आदिवासी साहित्य की श्रेणी में रखा जा सकता है ंकिन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश की राजनीतिक व्यवस्था ने आदिवासियों को यद्यपि कुछ संवैधानिक अधिकार दिये किन्तु अशिक्षा के कारण उसकी रौशनी उन तक नहीं पहुँच पायी, ऐसे में समाज के तथाकथित नेता, ठेकेदार, जमींदार, साहूकार आदि ने उनका शोषण किया और वे शोषित होकर गरीबी में आज भी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वस्तुतः आदिवासी समाज में ऐसी समस्याएँ हैं जिनके कारण आदिवासियों का अस्तित्व खतरे में है।

बस्तर छत्तीसगढ का एक ऐसा महत्वपूर्ण जिला है जो अपनी विशाल वन एवं खनिज सम्पदा के साथ ही साथ आदिवासी बहुलता के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। बस्तर क्षेत्र की जनजातियों को केन्द्र में रखकर 20वीं सदी में जो उपन्यास लिखे गए हैं, वे इस प्रकार हैं–

राजेन्द्र अवस्थी– 'सूरज किरण की छाँव', (1958), गुलशेर खाँ शानी– 'साँप और सीढी', (1969), गुलशेर खाँ शानी– सालवनों के द्वीप (1986) आदि।

इक्कीसवीं सदी में बस्तर क्षेत्र की जनजातियों को केन्द्र में रखकर मुख्य रूप से कुलदीप सिंह सूरी– 'जंगल की संतान' (2009), ब्रह्मवीर सिंह– 'दण्ड का अरण्य' (2012), राजीव रंजन प्रसाद– 'आमचो बस्तर' (2012), 'ढोलकल' (2013), गिरीश पंकज– 'टाउन हॉल में नक्सली' (2013), संजीव बख्शी– 'भूलन कांदा' (2014), राजीव रंजन प्रसाद– 'बस्तर 1857' (2015), हृदयेश जोशी– 'लाल लकीर' (2016) आदि उपन्यास आते है। बीसवीं सदी के प्रस्तुत सभी उपन्यास मेरे शोध प्रबन्ध के आधार ग्रन्थ हैं।

शोध विषय की प्रेरणा व चयनः

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पहले उसकी पूरी अवधारणा एवं उसके प्रत्येक प्रतिमान से परिचित होना पड़ता है। सर्वप्रथम मैंने एम.ए. में झारखण्ड की 'असुर' जनजाति को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' को आधार बनाकर 'रणेन्द्र कृत ग्लोबल गाँव के देवता उपन्यास में चित्रित आदिवासियों की समस्याएँ' विषय पर लघु शोध कार्य किया। इसी क्रम में मेरा एम.फिल. के शोध का विषय 'राजेन्द्र अवस्थी कृत सूरज किरण की छाँव एवं जंगल के फूल उपन्यासों में निहित आदिवासी जीवन की विद्रूपताएँ' था। ये दोनों बस्तर के गोंड आदिवासियों को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यास हैं। इस प्रकार लघु शोध कार्य करते हुए आदिवासी जनजीवन को जानने–समझने की प्रक्रिया का क्रम बढता चला गया। इस प्रक्रिया में मैंने यह जाना कि आज भी इन आदिवासी समुदायों को इस सभ्य समाज में स्थान नहीं दिया गया है। ये लोग शहर से दूर जंगल में रहकर सीमित संसाधनों के साथ जीवन यापन करने के लिए विवश हैं। संवैधानिक तौर पर तो इन आदिवासी समुदायों को अनेक अधिकार प्रदान किए गए किन्तु ये अधिकार कागजी कार्यवाही तक सीमित होकर रह गए। सम्भवतः आदिवासी जनजीवन से परिचित होने के उपरान्त मेरे मन का उद्वेलन और बढ़ गया। जब मेरा शोध छात्रा के रूप में इस विश्वविद्यालय में चयन हुआ तो मेरा मन इनकी समस्याओं तथा उनके समाधान खोजने के लिए उत्सुक हो उठा।.

नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण बस्तर की जनजातियों को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य में कम ही रचनाएँ लिखी गयी हैं। ऐसे में मेरी शोध निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना ने इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आपसी चर्चा एवं अपने गुरूजनों से वार्ता के उपरान्त मैंने ''**इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवनः संकट एवं संघर्ष**'' विषय को अपने शोध कार्य का आधार बनाने का निश्चय किया।

विषय के निर्धारण एवं रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना ने सहायता की। तदुपरान्त विषय से सम्बन्धित सामग्री संचयन हेतु मैं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान (आगरा) अम्बेडकर

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में कई बार गयी और वहाँ मैंने पुस्तकों का अध्ययन किया। मेरी शोध निर्देशिका ने आदिवासी साहित्य से संदर्भित (विशेषांक) पत्रिकाएँ मुझे पढ़ने के लिये प्रदान की। इसके साथ ही संचार माध्यम इंटरनेट से भी सामग्री संचयन में मुझे सहायता मिली।

शोध विषय का उद्देश्यः

प्रस्तुत विषय पर शोध करने का उद्देश्य साहित्य के माध्यम से बस्तर जिले के आदिवासी समुदाय के जीवनगत संघर्षो एवं जटिल समस्याओं को रेखांकित करना है। साथ ही उन स्थितियों एवं कारणों की पड़ताल करना है जिसके चलते आदिवासी समुदाय विकास की मुख्य धारा से पृथक हैं आज मानव अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जंगलों में रहने वाले लोगों की अस्मिता के साथ खिलवाड़ कर रहा है और उन आदिवासियों को इस कगांर पर पहुँचा दिया है कि आज इनका समाज में अस्तित्व नगण्य रह गया है। प्राकृतिक सम्पदाओं से जहाँ इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती थी वहीं आज व्यक्ति विकास के नाम पर उस सम्पदा (वनों) को नष्ट करता जा रहा है जिससे इन जनजातियों के लिए अनेक समस्याएँ– भुखभरी, बेरोजगारी, विस्थापन आदि उत्पन्न होती जा रही हैं। इन समस्याओं का यदि समय पर निवारण नहीं किया गया तो आदिवासी समुदायों का अस्तित्व ही संकट में आ जायेगा। आदिवासी हिन्दी उपन्यासकारों ने आदिवासी समाज के अन्दर विद्यमान समस्याओं को परत–दर–परत खोलने का प्रयास किया है। बस्तर जिले में बसने वाले आदिवासी समुदाय की साहित्य में उपस्थिति एवं उनके प्रति साहित्य के सरोकरों को जानना तथा इनकी समस्याओं, जटिलताओं, संघर्षो एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को उद्घाटित करना ही मेरे शोध का उद्देश्य है।

शोध–विषय का महत्त्वः

मानव जीवन का यथार्थ एवं सूक्ष्म चित्रण होने के कारण 'उपन्यास' गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है जो कि मेरे मन के अधिक निकट है। प्रस्तुत शोध विषय ''**इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन : संकट एवं संघर्ष**'' में आदिवासी जीवन के संकट एवं उनके द्वारा किए गए संघर्षो का अध्ययन किया जायेगा। आज जरूरी जान पड़ता है कि हमें पीछे छूटे हुए लोगों को

अपने बराबर लाना है। बस्तर क्षेत्र की विभिन्न जनजातियों के जीवनगत संघर्षो को जानना है । इस प्रक्रिया में मेरे शोध प्रबन्ध द्वारा भी तुच्छ योगदान दिया जायेगा।

कुलदीप सिंह सूरी कृत 'जंगल की संतान' उपन्यास बस्तर जिले के आदिवासी समुदाय के संघर्षो को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। 'दण्ड का अरण्य' उपन्यास ब्रह्मवीर सिंह द्वारा लिखा गया है जिसमें उन्होने आदिवासियों की तबाही, बरवादी, बेदखली आदि को व्यक्त किया है। राजीव रंजन प्रसाद कृत 'आमचो बस्तर' आदिवासियों की आस्था को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है जिसमें उनके धार्मिक व सांस्कृतिक पहलुओं को दिखाने का प्रयास किया है। साथ ही यह उपन्यास बस्तर की संस्कृति, सदियों से होने वाले ऐतिहासिक घटनाक्रम, शोषण के खिलाफ विद्रोह ओर संघर्ष की कहानी प्रस्तुत करता है। गिरीश पंकज कृत 'टाउन हॉल में नक्सली' उपन्यास में बस्तर क्षेत्र में व्याप्त नक्सलवाद की समस्या को उजागर किया गया है। संजीव बख्शी कृत 'भूलन कांदा' उपन्यास बस्तर क्षेत्र के आदिवासी इलाके में घटित एक दुर्घटना को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। हृदयेश जोशी कृत 'लाल लकीर' उपन्यास में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में घट रही त्रासदी के रेशों को पकड़ने व समझने की कोशिश की गई है। साथ ही इसमें बस्तर के आदिवासी समुदाय की युवती भीमें और उसके प्रेमी रामदेव की संघर्षमय कहानी को प्रस्तुत किया है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि आदिवासी साहित्य अपने दायरों में उत्पीड़ित अस्मिताओं के प्रति संवेदनशील है। आदिवासी हिन्दी उपन्यासकारों ने बस्तर क्षेत्र के आदिवासी समाज की समस्त समस्याओं को बड़े ही सूक्ष्म रूप से यथार्थ के धरातल पर उतारा है।

अनुसंधान पद्धतिः

मनुष्य एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए निरन्तर खोज, शोध व अनुसंधान करता रहता है। मानव की यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसके कारण अनुसंधान उसके जीवन के हर क्षेत्र में चलता ही रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है। श्रद्धा,

लगन, निष्ठा व अथक प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में है। इस शोध कार्य हेतु अपने शोध विषय से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन, विश्लेषण और मूल्यांकन हेतु विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। अन्त में सम्पूर्ण शोध विषय का निष्कर्ष दिया जायेगा।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्यः

शोध कार्य हेतु चयनित विषय **'इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन : संकट एवं संघर्ष'** पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। बस्तर क्षेत्र को लेकर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य व लघु शोध कार्य हुआ है वह मेरे शोध कार्य के विषय से बिल्कुल भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व बस्तर को आधार बनाकर जो शोध हुआ है उसकी सूची नीचे दी जा रही है जिसके द्वारा यह निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक एवं भिन्नता लिए हुए है।

1. **बस्तर के आदिवासियों के नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन**

   शोधार्थी – शिरीन लाखे

   निर्देशक – डॉ. रमेशचन्द्र महरोत्रा

   पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय (1988)

2. **बस्तर मे शिक्षा का इतिहास (सन् 1886 ई. से सन् 1985 तक)**

   शोधार्थी – राजेश कुमार थथराटे

   निर्देशक – डॉ. रामकुमार बेहार

   पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

3. **बस्तर जिले में नक्सलवादी गतिविधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन**

   शोधार्थी – गिरीश कांत पाण्डेय

   निर्देशक – डॉ. अशोक कुमार द्विवेदी

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

शोध विषय की व्याप्तिः

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय नियोजित होना आवश्यक है शोध कार्य को सुविधा जनक बनाने हेतु मैंने अपने शोध विषय ''**इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन : संकट एवं संघर्ष**'' को निम्नलिखित अध्यायों में बाँटा है–

इक्कीसवीं सदी के बस्तर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन : संकट एवं संघर्ष

भूमिका

प्रथम अध्याय – पृष्ठभूमि

1. उपन्यासकार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. उपन्यास का स्वरूप एवं परम्परा
3. आदिवासी हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास

द्वितीय अध्याय – आदिवासी समाज एवं बस्तर की पृष्ठभूमि : सैद्धान्तिक सर्वेक्षण

- आदिवासी समाज : एक परिचय
- आदिवासी : अर्थ, परिभाषा और विकास
- भारत में आदिवासी समाज : स्वरूप एवं संस्कृति
- बस्तर का ऐतिहासिक परिवेश
- बस्तर का भौगोलिक परिवेश
- बस्तर का सामाजिक परिवेश
- बस्तर का राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिवेश

- बस्तर का धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश
- बस्तर की प्रमुख जनजातियाँ (लक्षण विशेषताएँ)
- अन्य

तृतीय अध्याय – बस्तर केन्द्रित आदिवासी हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष

- आदिवासी चिन्तन और अस्मिता की तलाश
- आदिवासी समाज एवं स्त्री की स्थिति
- विस्थापन एवं विघटन
- आदिवासी समुदाय एवं पारिवारिक संघर्ष
- आदिवासी समाज के संघर्ष व चनौतियाँ
- आदिवासी जीवन के नये प्रतिमान
- अन्य

चतुर्थ अध्याय – बस्तर केन्द्रित आदिवासी हिन्दी उपन्यासो में आर्थिक संघर्ष

- अशिक्षा एवं बेरोजगारी
- गरीबी और भूमिहीनता
- औद्योगीकरण एवं आदिवासी जनजीवन
- जंगल और जमीन के लिए संघर्ष
- आवास एवं भूलभूत सुविधा का अभाव
- अर्थोपार्जन के विविध आयाम
- विकास के लिए किए गए संघर्ष एवं उनके प्रयास
- अन्य

पंचम अध्यायः— बस्तर केन्द्रित आदिवासी हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक संघर्ष

- आदिवासी जनजीवन एवं नक्सलवाद
- भ्रष्ट राजनीतिक सत्तातन्त्र और आदिवासी
- आदिवासी समुदाय और भ्रष्टाचार
- भारतीय संविधान और आदिवासी अधिकार
- अन्य

षष्ठ अध्याय — बस्तर केन्द्रित आदिवासी हिन्दी उपन्यासों में धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्ष

- आदिवासी संस्कृति, लोकविश्वास और परम्परा
- ईसाई मिशनरियों का प्रभाव एवं धर्मान्तरण
- आदिवासियों की धार्मिक मान्यताएँ एवं रूढ़ियाँ
- खान—पान, उत्सव और त्यौहार
- अन्य

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

सहायक ग्रन्थ

पत्र—पत्रिकाएँ

कोश/विश्वकोश

इंटरनेट

आधार ग्रन्थ

1. जंगल की संतानः कुलदीप सिंह सूरी, विश्व भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
2. दण्ड का अरण्यः ब्रह्मवीर सिंह, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
3. आमचो बस्तर : राजीव रंजन प्रसाद, यश प्रकाशन, 2012
4. ढोलकल : राजीव रंजन प्रसाद, यश प्रकाशन, 2013
5. टाउन हॉल में नक्सलीः गिरीश पंकज, नेहा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
6. भूलन कांदा : संजीव बख्शी, अंकिता प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
7. बस्तर 1857 : राजीव रंजन प्रसाद, यश प्रकाशन, 2015
8. लाल लकीरः हृदयेश जोशी, हार्पर कॉलिस प्रकाशन, 2016

सहायक ग्रन्थ

1. भारतीय उपन्यास परम्परा और ग्राम केन्द्री उपन्यासः भोलाभाई पटेल, रंगद्वार प्रकाशन, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 2000
2. भारत के आदिवासीः विकास की समस्याएँः पी. आर. नायडू, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2002
3. भारत की आदिवासी समस्याएँः जी. जे. पटेल. एन.पी. शुक्ल, जमनादास कंपनी, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण –1994–95
4. आदिवासी समाज का समाजशास्त्रः एस.जी.दुबे, जे.के. दुबे, अनड़ा बुक डिपो, अहमदाबाद, संस्करण 2007
5. आदिवासी समाज और शिक्षा : रामशरण जोशी, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 2007
6. आदिवासी विकास : एक सैद्धान्तिक विवेचन : डॉ. ब्रह्ममदेव शर्मा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1986
7. आदिवासी कौन ? रामणिका गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007
8. राजेन्द्र अवस्थी का कथा साहित्यः डॉ. भाऊ साहेब परदेशी, साहित्य निलय प्रकाशन, कानपुर, 2000
9. हिन्दी के आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. बी. के. कलासवा, 2002
10. भारत के आदिवासी : पी.आर. नायडु, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997
11. मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृतिः डॉ. शिवकुमार तिवारी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1999
12. मध्यप्रदेश के गोंड राज्यः डॉ. सुरेश मिश्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2000
13. आँचलिकता और हिन्दी उपन्यास : डॉ. नगीन जैन अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976.
14. छत्तीसगढ़ का इतिहासः डॉ. रमेन्द्र नाथ मिश्र, 1998
15. प्राचीन बस्तर अर्थात् दण्डकारण्य का संस्कृति इतिहासः डॉ. हीरालाल शुक्ल, प्रथम संस्करण, 1978

16. बस्तरनामाः राजीव रंजन प्रसाद, यश प्रकाशन, 2015

17. सूरज किरण की छाँवः राजेन्द्र अवस्थी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1958

18. साँप और सीढ़ीः शानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960

19. जंगल के फूलः राजेन्द्र अवस्थी, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, नई दिल्ली, 1969

20. शालवनों के द्वीपः शानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

पत्र–पत्रिकाएँ

1. वाड्मय (आदिवासी विशेषांक–1) डॉ. एम. फीरोज अहमद, अलीगढ़, त्रैमासिक जुलाई 2013

2. अराबली उद्घोष (सामाजिक साहित्यिक जनचेतना की सामयिक पत्रिका) डॉ. जनक सिंह मीणा, जुलाई– दिसम्बर, 2014

3. कथा क्रम (आदिवासी समाज और समाज विशेषांक) शैलेन्द्र सागर, लखनऊ, त्रैमासिक अक्टूबर – दिसम्बर 2011

4. वाड्मय (आदिवासी विशेषांक –2) डॉ. एम.फीरोज अहमद, अलीगढ़, त्रैमासिक जुलाई 2014

5. अपनी माटी ई पत्रिका–अशोक जमनानी, अंक (19) दलित आदिवासी विशेषांक सितम्बर–नवम्बर (2015) चित्रौड़गढ़